मशरूम की खेती का एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

एक दिवसीय मशरूम की खेती का प्रशिक्षण जनता कॉलेज बकेवर इटावा में पादप रोग विज्ञान विभाग के द्वारा स्नातक कृषि के अंतिम वर्ष के छात्रों को मशरूम की खेती करने के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ राजेश किशोर त्रिपाठी के दिशा निर्देशन में पादप रोग विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ मनोज यादव ने मशरूम की खेती का प्रशिक्षण कराया। डॉ यादव ने ओयस्टर मशरूम की उपयोगिता को बताते हुए इसकी खेती का क्रमबद्ध ढंग से प्रशिक्षण कराया। उन्होंने बताया कि ओयस्टर मशरूम की खेती करना बहुत ही आसान है जिसको उगाने के लिए फसलों के अवशेष की आवश्यकता पड़ती है। फसल अवशेष या भूसे को 10 से 12 घंटे के लिए पानी में भिगो देते हैं। तथा भूसे का निर्जीवीकरण करने के लिए पानी में ही दो प्रतिशत फॉर्मलीन मिला देते हैं तथा भूसा भिगोने के बाद उसको ढक दिया जाता है। बाद में पानी से भूसा निकल कर फर्श पर भूसे को सुखाया जाता है लगभग 60 से 70% नमी रहने पर उसमें 4 किलो स्पान (मशरूम का बीज)/कुन्तल भूसे की दर से मिला देते हैं। स्पान मिले हुए भूसे को पॉलिथीन बैग में भर देते हैं और पॉलिथीन का मुंह रबड़ के द्वारा बंद कर दिया जाता है तथा निडिल से पूरे पॉलिथीन बैग में 10 से 12 सुराग कर दिए जाते हैं जिससे मशरूम कवक को ऑक्सीजन मिलती रहे । उसके बाद उन पॉलिथीन बैग को कमरे या झोपड़ी में 12 से 15 दिन के लिए रख देते हैं। जब पॉलिथीन बैग सफेद दिखाई देने लगे तो पॉलिथीन हटाकर मौसम के हिसाब से प्रतिदिन उसमें पानी का छिड़काव करते रहना चाहिए। इसके बाद 8 से 12 दिन में ओयस्टर मशरूम की पहली फसल तैयार हो जाती है। एक कुंटल भूसे में लगभग 70 से 80 किलो मशरूम का उत्पादन किया जा सकता है। मशरूम का प्रयोग सब्जी के अलावा अन्य प्रकार के उत्पाद तैयार किए जाते हैं जैसे अचार, आटा, हर्बल उत्पाद इत्यादि। मशरूम का सबसे ज्यादा उपयोग उसकी औषधीय गुणों के कारण किया जाता है। इस मौके पर कॉलेज के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ एमपी यादव, डॉ पी के राजपूत, डॉ धर्मेंद्र कुमार, डॉ आदित्य कुमार, डॉ अलका देव तथा विभाग के कर्मचारी राजकुमार वर्मा, मनोज दीक्षित, मुकेश कुमार, दामोदर तथा उन्नतिशील किसान निर्देश कुमार व अलंकार सहित छात्र -छात्राएं उपस्थित रहे।

MUSHROOM PRODUCTION
UNIT

@ चेतना

छात्रों को एक दिवसीय मशरूम की खेती के लिये दिया गया प्रशिक्षण

चेतना कार्यालय

बकेवर। जनता कॉलेज में स्नातक कृषि के अंतिम वर्ष के छात्रों को मशरूम की खेती करने के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. राजेश किशोर त्रिपाठी के दिशा निर्देशन में पादप रोग विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज यादव ने मशरूम की खेती का प्रशिक्षण कराया। डॉ यादव ने ओयस्टर मशरूम की उपयोगिता को बताते हुए इसकी खेती करने का क्रमबद्ध ढंग से प्रशिक्षण कराया। उन्होंने बताया कि ओयस्टर मशरूम की खेती करना बहुत ही आसान है जिसको उगाने के लिए फसलों के अवशेष की आवश्यकता पड़ती है। फसल अवशेष या भूसे को 10 से 12 घंटे के लिए पानी में भिगो देते हैं। तथा भूसे का निजीर्वीकरण करने के लिए पानी में

ही दो प्रतिशत फॉर्मलीन मिला देते हैं तथा भूसा भिगोने के बाद उसको ढक दिया जाता है। बाद में पानी से भूसा निकल कर फर्श पर भूसे को सुखाया जाता है लगभग 60 से 70% नमी रहने पर उसमें 4 किलो स्पान (मशरूम का बीज) प्रति कुन्तल भूसे की दर से मिला देते हैं। मशरूम का सबसे ज्यादा उपयोग उसकी औषधीय गुणों के कारण किया जाता है। इस मौके पर कॉलेज के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ.एम.पी. यादव, डॉ.पी.के.राजपूत, डॉ. धर्मेंद्र कुमार, डॉ.आदित्य कुमार, डॉ.अलका देव तथा विभाग के कर्मचारी राजकुमार वर्मा, मनोज दीक्षित, मुकेश कुमार, दामोदर तथा उन्नतिशील किसान निर्देश कुमार व अलंकार सहित छात्र –छात्राएं उपस्थित रहे।

आज

इटावा

कानपुर
19 अक्टूबर 2024

एक दिवसीय मशरूम की खेती का दिया गया प्रशिक्षण

प्रशिक्षण में भाग लेते बच्चे।

बकेवर (इटावा) 18 अक्टूबर। जनता कॉलेज में स्नातक कृषि के अंतिम वर्ष के छात्रों को मशरूम की खेती करने के लिए 'एक दिवसीय प्रशिक्षण' का आयोजन किया गया।कॉलेज के प्राचार्य डॉ.राजेश किशोर त्रिपाठी के दिशा निर्देशन में पादप रोग विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मनोज यादव ने मशरूम की खेती का प्रशिक्षण कराया। डॉ यादव ने ओयस्टर मशरूम की उपयोगिता को बताते हुए इसकी खेती करने का क्रमबद्ध ढंग से प्रशिक्षण कराया। उन्होंने बताया कि ओयस्टर मशरूम की खेती करना बहुत ही आसान है जिसको उगाने के लिए फसलों के अवशेष की आवश्यकता पड़ती है। फसल अवशेष या भूसे को 10 से 12 घंटे के लिए पानी में भिगो देते हैं। तथा भूसे का निर्जीवीकरण करने के लिए पानी में ही दो प्रतिशत फॉर्मलीन मिला देते हैं तथा भूसा भिगोने के बाद उसको ढक दिया जाता है। बाद में पानी से भूसा निकल कर फर्श पर भूसे को सुखाया जाता है लगभग 60 से 70 प्रतिशत नमी रहने पर उसमें 4 किलो स्पान (मशरूम का बीज) प्रति कुन्तल भूसे की दर से मिला देते हैं। स्पान मिले हुए भूसे को पॉलिथीन बैग में भर देते हैं और पॉलिथीन का मुंह रबड़ के द्वारा बंद कर दिया जाता है तथा निडिल से पूरे पॉलिथीन बैग में 10 से 12 सुराग कर दिए जाते हैं जिससे मशरूम कवक को ऑक्सीजन मिलती रहे। उसके बाद उन पॉलिथीन बैग को कमरे या झोपड़ी में 12 से 15 दिन के लिए रख देते हैं। जब पॉलिथीन बैग सफेद दिखाई देने लगे तो पॉलिथीन हटाकर मौसम के हिसाब से प्रतिदिन उसमें पानी का छिड़काव करते रहना चाहिए। इसके बाद 8 से 12 दिन में ओयस्टर मशरूम की पहली फसल तैयार हो जाती है। एक कुंटल भूसे में लगभग 70 से 80 किलो मशरूम का उत्पादन किया जा सकता है। मशरूम का प्रयोग सब्जी के अलावा अन्य प्रकार के उत्पद तैयार किए जाते हैं जैसे अचार, आटा, हर्बल उत्पद इत्यादि। मशरूम का सबसे ज्यादा उपयोग उसकी औषधीय गुणों के कारण किया जाता है। इस मौके पर कॉलेज के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ.एम.पी. यादव, डॉ.पी.के.राजपूत, डॉ. धर्मेंद्र कुमार, डॉ.आदित्य कुमार, डॉ.अलका देव तथा विभाग के कर्मचारी राजकुमार वर्मा, मनोज दीक्षित, मुकेश कुमार, दामोदर तथा उन्नतिशील किसान निर्देश कुमार व अलंकार सहित छात्र -छात्राएं उपस्थित रहे।

रावे कार्यक्रम के तहत उझियानी में की गई किसान गोष्ठी

गोष्ठ को सम्बोधित करते डॉ. एम.पी. सिंह।

बकेवर (इटावा) 18 अक्टूबर। रावे कार्यक्रम के अंतर्गत जनता कॉलेज बकेवर के कृषि स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के द्वारा एक किसान गोष्ठी/प्रशिक्षण का आयोजन ग्राम उझियानी में कराया गया।

किसान गोष्ठी/प्रशिक्षण के संयोजक डॉ.एम.पी.सिंह ने सभी विषय विशेषज्ञों एवं किसानों का स्वागत करते हुए कहा कि रावे कार्यक्रम के अंतर्गत जनता कॉलेज बकेवर प्रत्येक वर्ष महेवा ब्लाक के अंतर्गत किसान गोष्ठी एवं प्रशिक्षण का आयोजन कर नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकी जानकारी किसानों तक पहुंचाने का कार्य करता है जिससे किसान आधुनिक नवीनतम तकनीकी के माध्यम से खेती करते हैं।यह समय रबी फसल की बुआई का समय है अक्टूबर माह में सरसों एवं आलू व नवंबर माह में गेहूं, जौ, जई की बुआई का उपयुक्त समय होता है। इटावा परिक्षेत्र के किसान अधिकांशतः धान- गेहूं फसल चक्र करते हैं जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति में गिरावट होती है इसलिए किसानों को फसल अदल-बदल कर करनी चाहिए और मक्का-लाही-गेहूं-मूंग या उर्द -सरसों- एगनी चारी या अरहर ज्वार-गेहूं मूंग/उर्द/कद्दू वर्गीय फसल उगानी चाहिए। साथ ही साथ सभी कृषि कार्य जैसे जुताई, बुवाई, सिंचाई निराई, फसल सुरक्षा उपाय, कटाई व मड़ाई समय से करने चाहिए अन्यथा उपज कम होती है। डॉ सिंह ने सरसों में उपज बढ़ाने के लिए थिनिंग, टॉपिंग व शस्य रसायनों के प्रयोग करने एवं गेहूं की उपज बढ़ाने के लिए एचडी 2967 प्रजाति लाइन में बोकर 21 से 25 दिन बाद पहली सिंचाई कर निराई करने व समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन के तहत पोषक तत्व देने की सलाह दी।

डॉ.धर्मेंद्र कुमार ने बीज उत्पादन तकनीकी एवं अच्छे निरोग स्वस्थ बीज एवं अधिक उपज देने वाली प्रजातियों को बोने की सलाह दी। डॉ.आदित्य कुमार ने कृषि के साथ-साथ पशुपालन करने की सलाह दी और स्वस्थ पशुओं के लिए संतुलित आहार के बारे में जानकारी देने के साथ-साथ पशुओं के रोग उनके लक्षण व निदानों के बारे में बताया।

गोष्ठी में प्रमुख रूप से प्रीस, यशोदानंद चिंतामणि, श्री कृष्ण, देवेंद्र कुमार रूपाली राम, रामानंद, सुरेश चंद्र तिवारी, राकेश नारायण, अमर सिंह गौरीशंकर, चंद्र मोहन तिवारी, प्रहलाद सिंह, हरिश्चंद, दिनेश कुमार, जगदीश, रूप सिंह, ज्ञान सिंह, राम रतन आदि कृषक उपस्थित रहे।